प्रकाशन तिथि : 15 सितम्बर, 2020
प्रेषण तिथि : 19 सितम्बर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 13 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

स्वामीजी व संघप्रमुख श्री को कोरोना इफेक्ट

(अस्पताल से स्वस्थ होकर लौटे)

यथार्थ गीता के प्रणेता स्वामी अड़गड़ानंदजी एवं श्री क्षत्रिय युवक संघ के संघ प्रमुख माननीय भगवान सिंह जी भी वैश्विक महामारी के प्रभाव में आए। 28 अगस्त को कोरोना पॉजीटिव आने पर माननीय संघ प्रमुख श्री को जोधपुर स्थित एम्स में भर्ती करवाया गया। इसी प्रकार अपने प्रवास के दौरान अस्वस्थता अनुभव करने पर स्वामी जी को भी वाराणसी के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया। कुछ दिन अस्पताल में रहने के उपरान्त दोनों के स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार हुआ एवं दोनों को ही अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। स्वामी जी अभी अपने शक्तेषगढ़ (वाराणसी) स्थित आश्रम में एवं माननीय संघ प्रमुख श्री बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। स्वामी जी की अस्वस्थता की जानकारी मिलने पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं उत्तरप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी टेलीफोन पर उनकी कुशल क्षेम जानी।

सक्रिय रहें और सक्रिय दिखाई भी दें

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सहयोगियों से निरन्तर संवाद की श्रृंखला में 11 सितम्बर से प्रांत प्रमुखों से संवाद कार्यक्रम प्रारम्भ किया। एक दिन में दो संभागों के प्रांत प्रमुखों एवं तत्संबंधी संभाग प्रमुखों के साथ संचालन प्रमुख जी ने संवाद किया तथा केन्द्रीय कार्यकारी आदि केन्द्रीय सहयोगी भी इसमें उपस्थित रहे। 11 सितम्बर को जयपुर एवं नागौर संभाग के प्रांत प्रमुखों की ऑनलाईन बैठक रखी गई, 12 सितम्बर को जालोर व मेवाड़ मालवा संभाग की बैठक हुई। 13 सितम्बर को मेवाड़ व बागड़, बीकानेर व मध्य गुजरात के संभाग प्रान्त प्रमुखों की बैठक रखी गई। यह संवाद अन्य संभागों के प्रांत प्रमुखों से भी लगातार जारी रहा। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

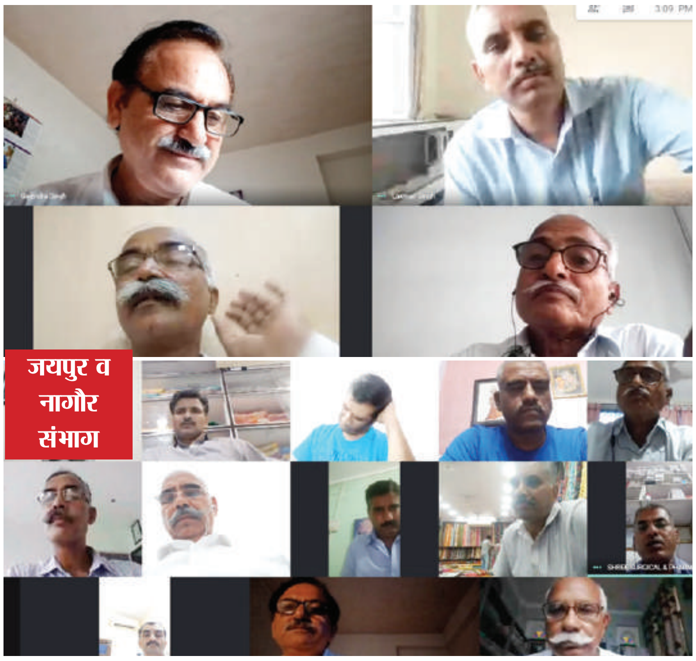

कांग्रेसी राजपूत नेताओं को पत्र

राजस्थान के स्कूली पाठ्यक्रम को विकृत कर पढ़ाने के विरुद्ध चल रहे अभियान के तहत श्री प्रताप फाउंडेशन द्वारा कांग्रेस पार्टी के राजपूत नेताओं को पत्र लिखकर सहयोग मांगा गया है।

श्री प्रताप फाउण्डेशन

ए-8, तारा नगर, झोटवाड़ा, जयपुर - 302 012 दूरभाष 0141-2466353, 2466138
फैक्स : 0141-2466387 e-mail : sanghshakti@gmail.com

समाज आपको कांग्रेस पार्टी में समाज का प्रतिनिधि मानता है एवं अपेक्षा करता है कि आप अपनी पार्टी में समाज का पक्ष रखेंगे। साथ ही आप भी चाहते हैं कि समाज आपके माध्यम से कांग्रेस पार्टी से जुड़े एवं समर्थन करे। लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि राजस्थान में कांग्रेस पार्टी के शासन में शिक्षा विभाग द्वारा अपने पाठ्यक्रम में शातिराना तरीके से हमारे उज्ज्वल इतिहास को विकृत करने का प्रयास किया जा रहा है। महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक से जुड़े तथ्यों में भी छेड़छाड़ की गई है। अपने देश की रक्षार्थ अपना आत्मबलिदान देने वाली राजकुमारी के उत्सर्ग को हत्या कहकर संबोधित किया गया है। रूठी रानी के नाम से प्रसिद्ध एवं नारी अस्मिता की प्रतीक उमादे भटियाणी से संबंधित इतिहास को भी तोड़ मरोड़कर पढ़ाया जा रहा है। हल्दीघाटी, महाराणा उदयसिंह, गोगाजी चौहान, महारानी पद्‌मिनी आदि से संबंधित इतिहास को भी विकृत किया जा रहा है। विगत 3 माह से समाज के विभिन्न संगठन विभिन्न स्तरों पर अपना विरोध जता रहे हैं लेकिन कोई सकारात्मक कार्यवाही करने के अपेक्षा राजस्थान के शिक्षा मंत्री एवं उनका विभाग एक दो लेखकों एवं साहित्यकारों का हवाला देकर अपने दुष्कृत्य को सही सिद्ध करने को प्रयासरत है। एक तरफ विगत भाजपा सरकार थी, जिसने न केवल राजस्थान के भूले-बिसरे नायकों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया बल्कि ऐसे नायकों के नाम पर उनसे संबंधित स्थानों पर पैनोरमा बनवाकर उनके उज्ज्वल पक्ष को जनता के सामने प्रकट किया। वहीं आपकी पार्टी में हमारी उत्सर्ग मूलक संस्कृति एवं इतिहास के प्रति अपनी दुर्भावना एवं कुण्ठा को सत्ता के बल पर तुष्ट करने वाले लोगों को पुरुस्कृत कर महत्वपूर्ण पद नवाजे जा रहे हैं। ऐसे में कांग्रेस पार्टी में हमारे प्रतिनिधि के रूप में श्री प्रताप फाउण्डेशन आपसे अपेक्षा करता है कि आप समाज के विभिन्न संगठनों के माध्यम से व्यक्त हो रही इस पीड़ा से आपकी पार्टी के नेतृत्व को अवगत करवाएंगे ताकि समाज में आपके और आपका पार्टी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सके। आपसे समुचित कार्रवाई एवं तदनुरुक प्रत्युत्तर की अपेक्षा है।

निवेदक

महावीर सिंह सरवड़ी
संयोजक, श्री प्रताप फाउण्डेशन

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी पुस्तक 'बदलते दृश्य' में बीकानेर राज्य के महाराजा पदमसिंह व केसरीसिंह का उल्लेख किया है। इस बार हम उनके बारे में जानेंगे।

बीकानेर के शासक महाराजा कर्णसिंह के पुत्र पदमसिंह और केसरीसिंह का नाम इतिहास में असीम साहस, अद्‌भुत वीरता और अतुलनीय बल के लिए प्रसिद्ध है। केसरीसिंह महाराजा कर्णसिंह के द्वितीय पुत्र थे, उनकी माता खंडेला के शासक द्वारकादास की पुत्री थी। शाहजहां के बीमार पड़ने पर उसके पुत्रों में राज्य प्राप्ति के लिए जो संघर्ष हुआ उसमें अपने पिता की आज्ञानुसार केसरीसिंह और पदमसिंह औरंगजेब के साथ थे। दारा शिकोह के साथ युद्ध में दोनों भाइयों ने अद्‌भुत वीरता का प्रदर्शन किया था, केसरीसिंह ने युद्ध में औरंगजेब की प्राण रक्षा की थी। उनकी वीरता से प्रभावित औरंगजेब ने युद्ध क्षेत्र में अपने रुमाल से अपने हाथों से केसरीसिंह के मुख पर आए पसीने को पोंछा था। युद्ध में विजयी के बाद औरंगजेब ने अपनी रूमाल से केसरी सिंह और पदमसिंह के बख्तरों की धूल को झाड़ा। एक बार एक बड़े शेर को बाहु युद्ध में मार डाला था। केसरीसिंह का अधिकांश जीवन दक्षिण भारत में ही बीता, जहां उन्होंने अनेक युद्धों में विजयी प्राप्त की और वहीं उनका देहान्त हुआ। पदमसिंह महाराजा कर्णसिंह के तीसरे पुत्र थे। उनकी माता हाडा बैरीशाल की पुत्री थी। उनकी वीरता और अतुल पराक्रम की अनेक गाथाएं प्रसिद्ध है। एक बार दक्षिण में अपने पिता के साथ हाथी पर बैठे जा रहे थे तब एक शाही मुस्लिम सेनापति जो कर्णसिंह जी द्वेष रखता था, उनको मारने की नीयत से हाथी पर आ पहुंचा। पदमसिंह उसकी चाल को समझ गए और उसके हाथी के हौदे को पकड़कर हाथी को खींचकर अपने हाथी से भिड़ा दिया। पदमसिंह के इस बल को देखकर शाही सेनापति डर गया और प्राण बचाने के लिए हाथी से कूदकर भाग गया। पदमसिंह जब औरंगाबाद में थे तब उनके छोटे भाई मोहनसिंह का किसी हिरण को लेकर शहजादे मुअज्जम के साले मुहम्मद शाह मीर तोजक, जो शहर कोतवाल था से झगड़ा हो गया। दोनों ओर से तलवारें चल पड़ी, मोहनसिंह अकेले था, कोतवाल और उसके सैनिकों से लड़ते हुए मोहनसिंह मारे गए। पदमसिंह को जैसे ही पता चला, वो दीवान खाने आए और तलवार के ऐसा तीव्र प्रहार किया कि जिस पत्थर के खंभे के पीछे कोतवाल छिपा हुआ था उस पत्थर के खंभे को काटते हुए उनकी तलवार ने हत्यारे यवन के दो टुकड़े कर दिए। पदमसिंह की इस फुर्ती और वीरतापूर्ण प्रहार पर किसी कवि ने कहा है :

एक घड़ी आलोच, मोहन रे करतो मरण।
सोह जमारो सोच, करतां जातो करणावत।।

वि.सं. 1739 में दक्षिण में ताप्ती नदी के किनारे मराठो के साथ हुए युद्ध में पदमसिंह मुख्य सेना से अलग पड़ गए। मराठा सरदार सांवतराय और जादूराय ने सैनिक टुकड़ी के साथ उन्हें घेर लिया, सांवतराय पर उन्होंने भाले का ऐसा प्रहार किया कि वो घोड़े सहित सांवतराय को चीरता हुआ आधा बाहर निकल गया। शत्रु सैनिकों ने उन पर चारों ओर से प्रहार किए उनका घोड़ा मारा गया पर वे पैदल ही वीरतापूर्वक शत्रुओं के मस्तक काटते गए अंत में क्षत विक्षत होकर रणभूमि में गिर पड़े। अपने भाई का बदला लेने जादराय ने घायल पड़े पदमसिंह पर वार किया उस घायलवस्था में भी वीर पदमसिंह उछले और जादूराय को खींचकर घोड़े से नीचे पटक दिया और कटार के वार से उसका काम तमाम कर दिया और स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुए। -

खींवसिंह सुल्ताना

संदर्भ ग्रंथ : (1) बीकानेर राज्य का इतिहास : गौरीशंकर हीराचंद ओझा।
(2) बीकानेर का संक्षिप्त इतिहास : दीनानाथ खत्री।

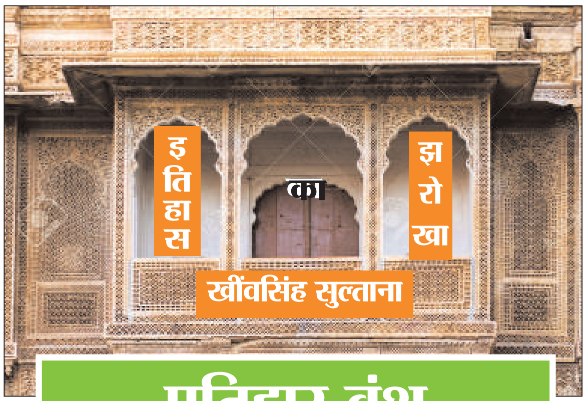

प्रतिहार वंश

हर्षवर्धन के बाद अस्थिर उत्तर भारत की राजनीतिक परिस्थितियों में जिन शक्तियों ने अपने कृतत्व से भारतीय इतिहास में अपना अलग स्थान बनाया उनमें से एक प्रमुख शक्ति प्रतिहार वंश था, जिसने लम्बे समय तक भारत को अरब आक्रमणकारियों से सुरक्षित रखा। मिहिर भोज की ग्वालियर प्रशस्ति व अन्य कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थों में प्रतिहारों को भगवान राम के भाई लक्ष्मण का वंशज बताया गया है। प्रारंभ में प्रतिहार राष्ट्रकूटों के छोटे सामन्तों के रूप में दिखाई देते हैं। इनके मूल स्थान के बारे में विद्वान एक मत नहीं है परन्तु अधिकांश विद्वान भीनमाल या उज्जयिनी को इनके मूल स्थान के रूप में स्वीकार करते है। राजनीतिक रूप से नागभट्ट प्रथम को इस वंश का प्रथम स्वतंत्र शासक माना जा सकता है जिसने 730 ई. से 756 ई. तक शासन किया था। उसने काठियावाड, मालवा और राजस्थान के कुछ क्षेत्रों को जीतकर प्रतिहार राज्य का विस्तार किया। नागभट्ट प्रथम ने सिन्ध की ओर से हुए अरब आक्रमणकारियों को ना केवल रोका बल्कि अरबों की विशाल सेना के गर्व को चूर-चूर कर दिया और उसने वापिस भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। नागभट्ट प्रथम के बाद कुछ समय के लिए कक्कुम तथा देवराज ने शासन किया था, वे दोनों ही निर्बल शासक थे। इन दोनों के बाद वत्सराज 775 ई. में प्रतिहार राज्य का शासक बना। यह अत्यन्त शक्तिशाली शासक था जिसने प्रतिहार राज्य को एक शक्तिशाली साम्राज्य में बदल लिया। उसने कन्नौज पर आक्रमण कर वहां के शासक इन्दायुध को परास्त कर अपना अधीनस्थ शासक बना डाला। वत्सराज के समय से ही कन्नौज, जो कि उत्तर भारत की राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता था, पर अधिकार के लिए प्रतिहारों, पालों व राष्ट्रकूटों में त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारम्भ हुआ। वत्सराज ने बंगाल के पाल शासक धर्मपाल को परास्त कर उत्तरी भारत के एक बड़े भू-भाग पर प्रतिहारों का शासन स्थापित किया, यह उसकी एक महान सफलता थी। परन्तु वत्सराज को राष्ट्रकूट शासक ध्रुव 'धारावर्ष' से परास्त होना पड़ा। पराजित वत्सराज राजस्थान की ओर जाना पड़ा। वत्सराज के बाद उसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय प्रतिहार साम्राज्य का शासक बना। अपने वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए उसने कन्नौज पर आक्रमण कर राष्ट्रकूट शासक 'ध्रुव' द्वारा बनाए गए शासक 'चक्रायुध' को परास्त किया। उसने 'मुंगेर' के नजदीक हुए एक युद्ध में पाल शासक धर्मपाल को परास्त किया। नागभट्ट द्वितीय ने आंध्र, सिन्ध, विदर्भ, मत्स्य, कौशि के शासकों को भी परास्त किया। शाकम्भरी के चौहानों ने भी उसकी अधीनस्थ स्वीकार कर ली। उसने तुर्कों को भी परास्त किया। परन्तु उसे भी राष्ट्रकूटों से पराजित होना पड़ा। राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय ने उसे परास्त कर उससे मालवा छीन लिया परन्तु वह इससे हताश नहीं हुआ और उसने उत्तर भारत के अनेक राज्यों को जीतकर इस पराजय की क्षतिपूर्ति कर ली। वह अपने समय का एक शक्तिशाली शासक था जिसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

(क्रमशः)

कर्नल रणवीर सिंह जामवाल बीएसएम

भारत की सर्वश्रेष्ठ पर्वतारोही

कर्नल रणवीरसिंह जामवाल सात शिखर और तीन बार माउंट एवरेस्ट पर तिरंगा फहराने वाले पहले भारतीय हैं। इन्होंने 29-30 अगस्त 2020 की रात लद्दाख में पैंगोंग झील क्षेत्र में सामरिक महत्व की चोटियों पर कब्जा करने में अहम्‌ भूमिका निभाई है। रणवीर सुपुत्र हवलदार ओंकारसिंह मूल निवासी गांव भडौरी जिला सांबा जम्मू कश्मीर का जन्म 26 दिसम्बर 1975 को हुआ था। प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर 1994 में सिपाही के पद सेना में भर्ती हो गए। अपनी प्रतिभा के बल पर आर्मी कैडट कॉलेज में प्रवेश पाकर 1998 में कमीशन पूर्व की ट्रेनिंग के लिए इण्डियन मिलिट्री अकादमी पहुंचे जहां जामवाल को जाट रेजिमेण्ट में कमीशन मिला। हाई आल्टीट्यूड वार फेयर स्कूल गुलमर्ग में प्रशिक्षण के दौरान जामवाल ने पर्वतारोहण के प्रति अपने स्वाभाविक कौशल और प्रतिभा को पहचाना और पर्वतारोही अभियानों में भाग लेना प्रारम्भ किया। कर्नल रणवीर ने अब तक 30 पर्वतारोही अभियानों में भाग लिया है। जामवाल को सातों महाद्वीपों के सर्वोच्च शिखरों पर तिरंगा फहराने का गौरव प्राप्त है। माउण्ड एवरेस्ट पर तो जामवाल ने तीन बार विजयी हासिल की है। कर्नल जामवाल की गिनती दुनियां के श्रेष्ठ पर्वतारोहियों में आती है। कर्नल जामवाल को 31 अगस्त 2013 को एडवेंचर के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च राष्ट्रीय अवार्ड 'तेनजिंग नोरगे नेशनल एडवेंचर अवार्ड' प्रदान किया गया। 15 जनवरी 2015 को राष्ट्रपति ने जामवाल को विशिष्ट सेवा मेडल प्रदान कर सम्मानित किया। इसी दिन 2016 में फिर उन्हें इस पदक से नवाजा गया। 26 जनवरी 2016 को जम्मू-कश्मीर सरकार ने इन्हें शेर-ए-कश्मीर स्पोर्टस अवार्ड से सम्मानित किया। 18 नवम्बर 2017 को इण्डियन माउण्टेनियरिंग फाउंडेशन ने पर्वतारोहण के क्षेत्र में जामवाल के योगदान के सम्मान में उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान किया। 29-30 अगस्त की रात चीन ने लद्दाख में घुसपैठ कर पैगोंग त्सो के दक्षिण किनारे पर कब्जा करने की कोशिश की लेकिन उसका यह प्रयास असफल रहा और उसे मुंह की खानी पड़ी। भारत ने पहल कर रेकिन ला को पुनः अपने कब्जे में ले लिया और ब्लैक टॉप और हेलमेट पर अपनी स्थित मजबूत कर ली।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संपादकीय

'चोर और चोर की मां'

हम सब सुनते आए हैं कि चोर को नहीं चोर की मां को मारना चाहिए अर्थात लक्षणों पर चोट करने की अपेक्षा कारणों का निवारण करना चाहिए। क्योंकि कारण जब तक रहेंगे, लक्षण पुनः पुनः प्रकट होते रहेंगे। इसीलिए हमारे यहां चोर को नहीं बल्कि चोर की मां को मारने की बात की जाती है, लेकिन क्या हम ऐसा कर रहे हैं? विगत दिनों कुछ महिला अध्यापिकाओं की चर्चा सुनी, उनका कहना था कि वे नौकरी इसीलिए करती हैं कि इससे उनका आत्म सम्मान बढ़ता है। ऐसे में प्रश्न उठना स्वाभाविक सा था कि क्या नौकरी करने से आत्म सम्मान बढ़ता है? किसी पराए व्यक्ति के सामने नौकर बनकर रहना आत्म सम्मान बढ़ाने वाला कैसे हो सकता है, समझ में नहीं आया। लेकिन यहां भी चोर की मां की अपेक्षा चोर को मारने का उपाय बताया गया, बांस के रहते बांसुरी को बजने से रोकने का प्रयास किया गया है। समाज में महिलाओं का सम्मान कम हुआ यह वास्तविकता है लेकिन क्या इसके कारण आर्थिक हैं? क्या आर्थिक रूप से कमाऊ महिलाओं के सम्मान को ठेस नहीं पहुंचाई जाती लेकिन हमारी व्यवस्था ने महिलाओं के असम्मान के मूल कारणों पर चोट करने की अपेक्षा यह पढ़ाना शुरू कर दिया कि महिलाओं के असम्मान का कारण उनका आर्थिक रूप से अपने परिवार पर निर्भर रहना है। इसका अर्थ यह नहीं कि उन्हें कमाना नहीं चाहिए, यदि परिवार की आवश्यकता है तो उन्हें कमाना ही पड़ेगा। यदि वे परिवार संचालन में आर्थिक रूप से सहयोगी बनना चाहें तो उन्हें नौकरी भी करनी पड़ेगी और ऐसा सोच कर करेंगी तो परिवार का पारिवारिक भाव भी प्रबल होगा लेकिन यदि वे इसे आत्म सम्मान के बहाने अपने अहंकार तो तुष्ट करने के साथ जोड़ेंगी तो पारिवारिक भाव क्षीण ही होगा। महिलाओं के असम्मान के पीछे मूल में व्याप्त कारण संस्कार हीनता पर चोट किए बिना सम्मान नहीं लौटाया जा सकता। महिलाओं पर अत्याचार करने वाले चंगेज खान, तैमूर लंग, अलाउद्दीन आदि को महान बताने वाली व्यवस्था संस्कारहीनता पर कैसे चोट करेगी? अपने हरम में सैंकड़ों महिलाओं को गुलामों की तरह रखने वाले अकबर को महान पढ़ाकर हम कैसे सम्मान लौटा सकते हैं? रूठी रानी उमादे भटियाणी के आत्म सम्मान को युवा पीढ़ी को न पढ़ाकर हम कौनसे आत्म सम्मान को लौटा पाएंगे? सीता के महान त्याग पर प्रश्न उठाने वालों को बुद्धिवादी का तमगा देने वाली व्यवस्था यदि महिलाओं के सम्मान की बात करेगी तो वे उन्हें एक इकाई के रूप में ही देखेगी और जब महिलाएं परिवार का आधार बनने की अपेक्षा, परिवार की सभी इकाइयों को जोड़ने वाली योजक बनने की अपेक्षा इकाई बनेंगी तो चारो ओर फैले रावणों, कंसों और दुर्योधनों से कैसे अपना सम्मान बचा पाएगी, यह समझ से परे है। यही है चोर की मां को मारने की अपेक्षा चोर को मारने वाली प्रवृत्ति और यह तो इसका एक मात्र उदाहरण है। यदि हम हमारे चारों तरफ देखें तो समाज और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं के प्रति यही रवैया नजर आएगा। हमारी वर्तमान व्यवस्था के संचालक समस्याओं को आगे वाले के लिए टाल कर अपना समय जैसे तैसे निकालने या अपने समय का उपयोग स्वयं को मजबूत करने में लगाते हैं और इसीलिए समस्याओं के कारणों की अपेक्षा लक्षणों पर फौरी चोट करने का तरीका अपनाते हैं। इसी का परिणाम है कि समस्याएं कालांतर में प्रबल होती जाती हैं, विकराल होती जाती हैं और नए आने वाले फिर उन समस्याओं के कारण उत्पन्न तपते लक्षणों पर कुछ फुहारें डाल कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। यह प्रवृत्ति क्यों कि इस व्यवस्था के तहत राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले लोग अपनाते हैं इसीलिए उनका अनुकरण होते होते यह राजनीतिक, प्रशासनिक आदि के साथ-साथ समाज और परिवारों में भी पहुंच रही है। इसी का परिणाम है कि समस्याएं जस की तस हैं और हम हर बार एक ही प्रकार की समस्याओं से जूझ रहे हैं। समाज की चर्चा हम करें तो प्रायः हम फूट, टांग खिंचाई, आपसी लड़ाई की बात करते हैं और इन्हें मिटाने के लिए बड़े-बड़े भाषण भी देते हैं लेकिन यह नहीं समझते कि ये सब लक्षण हैं, कारण नहीं। इन सबका कारण स्वार्थ एवं अहंकार है। स्वार्थ और अहंकार के वशीभूत होकर ही हम एक दूसरे को पीछे धकेलने, टांग खींचने या दुश्मन से मिलकर अपनों को हराने को तत्पर होते हैं। इसीलिए इन लक्षणों की बात करने की अपेक्षा श्री क्षत्रिय युवक संघ इनके कारण स्वार्थ और अहंकार पर चोट करता है। हमारे स्वार्थ को सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्वात्मा के दृष्टिकोण के रूप में सृष्टिगत स्वार्थ में रूपांतरित करता है वहीं अहंकार को स्वाभिमान में परिणत करता है। ऐसा ही एक उदाहरण है कि कुछ जोशीले युवा इस बात से उद्वेलित हैं कि कुछ जाति समुदाय हमारे महापुरुषों को हमसे छीन रहे हैं और इसीलिए वे उन जाति समुदायों से इस बाबत उलझते रहते हैं। लेकिन इस बात का अंतरावलोकन नहीं करते कि यह स्थिति क्यों बनी? क्या इसका कारण यह नहीं है कि हम आज भी मिहिर भोज के बारे में विस्तार से नहीं जानते और जब हम नहीं जानते, हमने तथ्यों को खोजने का प्रयास नहीं किया तो बताएंगे क्या? और हम नहीं बताएंगे तो लोग जैसे बताएंगे वही मान लिया जाएगा। इसीलिए इन सब लक्षणों पर अपनी ऊर्जा का बड़ा हिस्सा लगाने की अपेक्षा कारणों पर चोट करना आवश्यक है। तब तक यदि लक्षण बहुत बढ़ जाएं तो कुछ अस्थायी प्रयास समीचीन हैं लेकिन मूल चोट तो कारणों पर ही होनी चाहिए। चोर की मां रहेगी तो चोर पैदा होते रहेंगे। बांस रहेगा तो बांसुरी भी बजती रहेगी इसीलिए इससे निदान पाने का एक मात्र उपाय कारण का निवारण है और यह दीर्घ सूत्री काम है। श्री क्षत्रिय युवक संघ यही कर रहा है।

खरी-खरी

पस्त प्रतिपक्ष एवं किंकर्तव्यविमूढ़ कांग्रेस

आजाद भारत में प्रारम्भ के दशकों में कांग्रेस की एक छत्र सत्ता रही, संख्या की दृष्टिकोण से विपक्ष की उपस्थिति प्रभावी नहीं थी लेकिन फिर भी प्रतिपक्ष की बातों में दम हुआ करता था। उनकी आवाज में दम हुआ करता था और उसी के परिणाम स्वरूप सरकारें उनकी सुनती थी। उनकी आवाज का यह दम जनता में उनकी स्वीकार्यता के बल पर पैदा होता था। जनता से जुड़े मुद्दों की समझ और उनकी एक सीमा तक ईमानदार अभिव्यक्ति एवं रचनात्मक आलोचना के कारण जनता उनकी बात सुनती थी और क्यों कि जनता उनकी बात सुनती थी इसीलिए सरकारों को भी उनकी बात सुननी पड़ती थी। लेकिन आज की स्थिति क्या है? अर्थव्यवस्था निरन्तर गर्त की ओर अग्रसर है। कोरोना काल से पूर्व ही यह गिरावट प्रारंभ हो चुकी थी। नोटबंदी से पूर्व किए गए सरकारी दावों की पोल खोलने वाले अनेक तथ्य प्रकट हो चुके हैं। नई कर प्रणाली (जीएसटी) के नकारात्मक प्रभाव भी स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े भी आर्थिक धरातल पर नकारात्मक स्थितियों को बयां कर रहे हैं। चीन लगातार सीमा पर आक्रामक बन रहा है। नेपाल जैसा देश भी आंखे दिखा रहा है। सरकार के अनेक प्रकार के दावे अपना प्रभाव सकारात्मक नहीं छोड़ पा रहे हैं। भावनाओं का भरपूर राजनीतिक दोहन भी हो रहा है। लेकिन उसके बावजूद देश में सरकार के खिलाफ कोई माहौल दिखाई नहीं देता। लोग कष्ट उठाने को तैयार हैं लेकिन फिर भी सरकार की आलोचना को तैयार नहीं है, यहां तक की आलोचना सुनने को तैयार नहीं हैं। आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? क्या जनता के समक्ष सरकार की विफलताओं को उठाने का दायित्व विपक्ष नहीं उठा रहा? ऐसा भी नहीं है। राहुल गांधी सदैव सरकार के खिलाफ बोलते रहते हैं। अनेक वक्तव्य जारी करते रहते हैं। गाहे बगाहे विपक्षी पार्टियां धरने-प्रदर्शन भी करती रहती हैं लेकिन फिर भी प्रभाव क्यों नहीं छोड़ पा रहे? जनता उनके ऐसे प्रयास को गंभीरता से लेने की अपेक्षा शक की नजरों से क्यों देखती है? क्यों उनके द्वारा उठाए गए प्रश्नों के जवाब सरकार के पक्ष में जनता ही ढूंढ लेती है? यह सब विचारणीय है। आजाद भारत के इतिहास में ऐसा पस्त प्रतिपक्ष पहले कभी नहीं रहा। आपातकाल के दमन चक्र के दौरान भी प्रतिपक्ष की आवाज की मारक क्षमता इतनी दयनीय नहीं हुई। आखिर कारण क्या है? क्यों विपक्ष की आवाज में विश्वसनीयता नहीं रही? जनता उनकी बात में क्यों विश्वास नहीं करती? क्यों उनके द्वारा उठाए गए मुद्दे कुछ फैशनेबल बुद्धिवादियों की बौद्धिक चौंचलेबाजी से बाहर नहीं निकल पा रहे? इन सब प्रश्नों पर क्या भारत का विपक्ष गंभीर है? यदि गंभीर होता तो प्रमुख विपक्षी पार्टी किंकर्तव्यविमूढ नहीं होती। अपने आपको महान कहने वाली इस पार्टी के सामने आज क्या करें और क्या न करें की स्थिति बन गई है। इसीलिए तो यह अखिल भारतीय स्तर पर बच्चों की परीक्षा का विरोध करती है और इसके द्वारा शासित राज्यों में लाखों बच्चों की भिन्न प्रकार की परीक्षाएं आयोजित होती है। इसीलिए यह पार्टी उत्तरप्रदेश में बिजली बिल माफ करने की मांग करती है और राजस्थान में इसकी सरकार आर्थिक स्थिति का हवाला देकर बिजली के बिलों में बढ़ोतरी करती है। इस पार्टी के अर्थशास्त्री पूर्व प्रधानमंत्री कोरोना के कारण केन्द्र सरकार द्वारा कर्मचारियों के महंगाई भत्ते पर रोक का विरोध इसीलिए करते हैं कि इससे जनता में पैसा कम जाएगा तो क्रय शक्ति कम होगी और अर्थव्यवस्था में गति नहीं आएगी तो दूसरी तरफ राजस्थान में इनकी पार्टी की सरकार कर्मचारियों का वेतन काटती है। इस प्रकार का दोहरा चरित्र ही जनता में यह संदेश देता है कि इनके विरोध का कारण जनता की पीड़ा नहीं बल्कि केवल विरोध के लिए विरोध है और इसीलिए वह इनके विरोध को गंभीरता से नहीं लेती। एक तरफ तो इस पार्टी का सुप्रीम परिवार गैर गांधी अध्यक्ष के साथ काम करने की इच्छा जाहिर करता है और दूसरी तरफ पूर्णकालिक सक्रिय अध्यक्ष की आतंरिक मांग पर तिलमिला जाता है। इस पार्टी का नेतृत्व युवक कांग्रेस के तो चुनाव करवाना चाहता है लेकिन केन्द्रीय कार्य समिति में नियुक्ति ही करना चाहता है। यह सब जनता देखती है, समझती है, इसीलिए गंभीर नहीं होती।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्रद्धेय माट्साब इन्द्रसिंह जी राणीगांव की स्मृति में

विगत 19 अगस्त को संघ के वयोवृद्ध स्वयंसेवक श्रद्धेय इन्द्रसिंह जी माट्साब का देहावसान हुआ है। उनका जीवन संघमय था एवं वे एक आदर्श शिक्षक थे। उनके सम्पर्क में रहे अनेक लोगों की स्मृति में वे आज प्रेरणा पुरुष के रूप में विद्यमान है। ऐसे ही कुछ लोगों द्वारा भेजे गए संस्मरण यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

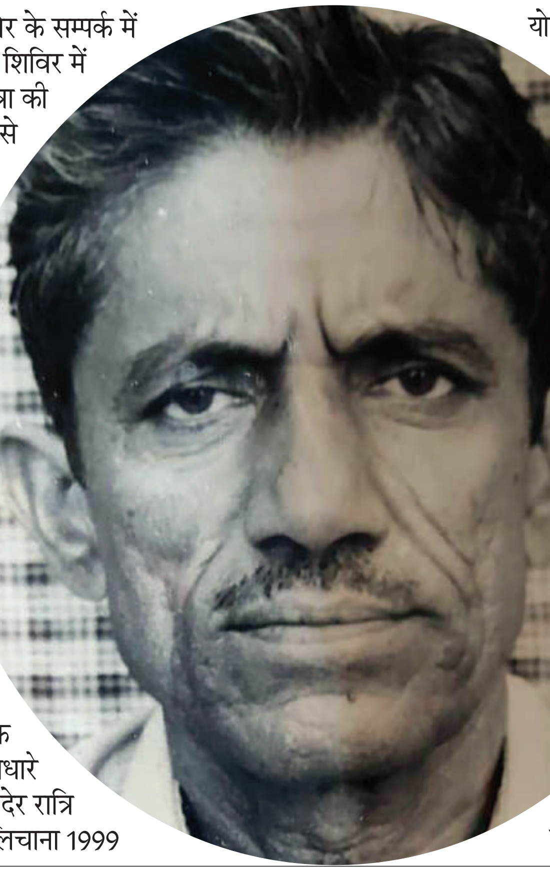

मैं वर्ष 1987 में कक्षा 9वीं में पढ़ने के लिए बाड़मेर गया। वहां श्री मल्लीनाथ छात्रावास में स्व. श्री इन्द्रसिंह जी रानीगांव तत्कालीन प्र.अ. रा.उ.प्रा.वि. संख्या 1 बाड़मेर के सम्पर्क में आया। श्री इन्द्रसिंह समय-समय पर हमारे छात्रावास में आया करते थे। उसी वर्ष अक्टूबर में रानीगांव आईटीसी शिविर था। मैं शाखा में नियमित जाया करता था। मैंने भी शिविर में जाने हेतु नाम लिखवाया परन्तु मुझे पहले शिविर में जाने की अनुमति नहीं मिली। मैं माट्साब के सामने शिविर में जाने के लिए रोने लग गया। माट्साब के कहने से नवरात्रा की छुट्टियां होने से हॉस्टल में सभी को एकत्रित कर कहा गया कि जो गांव जाना चाहे वे गांव व जो शिविर में जाना चाहे वे शिविर में जावें। मैं उस शिविर में गया और वहां से नियमित माट्साब से सम्पर्क शुरू हुआ। वह मेरा पहला शिविर था। इसके बाद माट्साब का प्रमोशन हो गया और आपका पदस्थापन सिवाना हो गया, उस समय लगभग डेढ साल तक सिर्फ शिविरों में ही सम्पर्क में आए। वर्ष 1990 में माट्साब की पोस्टिंग पुनः बाड़मेर हाई स्कूल में हो गई और नियमित शाखा व हॉस्टल में पुनः माट्साहब से सम्पर्क शुरू हुआ। इस दौरान पीटीसी अकली में शिविर समाप्त होने के पश्चात किसी बात पर देवीसिंह जी माडपुरा नाराज हो गए व मुझे डांटने लगे (नाराजगी किसी और पर थी।) वह क्रम करीब 15-20 मिनट तक चला और यह सब माट्साहब देख रहे थे, माट्साहब वहां से मेरे पास आए और मेरे को बाजू से पकड़कर दूर ले गए, उनकी आंखों में मुझे गुस्सा दिख रहा था, मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि मेरी कोई गलती भी नहीं और ये सब मेरे पर गुस्सा क्यों कर रहे हैं, परन्तु माट्साहब वहां से काफी दूरी दूसरे पेड़ की छाया में ले गए और मेरे पास बैठकर मुझे प्यार से कहा कि मैं यदि तुझे यहां नहीं लाता तो देवीसिंह जी चुप नहीं होते। मैंने पूछा कि आप गुस्सा क्यों कर रहे थे तो बताया कि यह तो सब उस मेटर को खत्म करने के लिए बनावटी गुस्सा था। मैं कॉलेज में पढ़ते समय कई बार माट्साहब के घर जाता था। वहां घंटों तक संघ पर चर्चा होती थी। माट्साहब की प्रेरणा से वर्ष 1991 से 1994 बाड़मेर शहर में एक शाखा (मल्लीनाथ छात्रावास) से आठ शाखाएं लगने लगी व शिव मंडल में माट्साब मेरे को साथ लेकर कई गांवों में पधारे और अलग-अलग जगह पर 6 शाखाएं वहां भी लगने लगी। माट्साहब को हमने किसी भी शाखा में चलने के लिए कहा तो हमेशा हमारे साथ चलते थे। उस समय वरिष्ठ लोगों में एकमात्र माट्साहब ही शाखाओं में हमारे साथ चलते थे। वर्ष 1990-91 में मैं रा.उ.मा.वि. बाड़मेर में पढ़ता था और माट्साहब उसी स्कूल में हिन्दी के व्याख्यता थे, माट्साहब का चौथा कालांश जिस कक्षा में होता था, उस कक्षा में माट्साहब चौथा कालांश उसके बाद होने वाली रेस्ट के समय और यदि पांचवें कालांश में किसी कारणवश टीचर नहीं आता तो उस कालांश तक लगातार पढ़ाते रहते थे। उनकी विद्यार्थियों में ऐसी साख थी कि कोई भी विद्यार्थी रेस्ट के बारे में नहीं बोलता था। वर्ष 1994 में बीए करने के बाद मैं कम्पीटीशन की तैयारी व उस समय खुद का खर्च चलाने हेतु जनवरी 1995 में सवाईसिंह जी नवातला (सीआई साहब) के पास जसोल चला गया। माट्साहब से 3 मई 1995 को बाड़मेर उनके घर मिला तो पहला प्रश्न था, पिछले पांच महीने कहां थे, माट्साहब मेरे द्वारा दिए गए उत्तर पर बहुत नाराज हुए और मुझे करीब एक घंटा तक कई उदाहरणों से डांटा व समझाया। इसके बाद घर के अन्दर जाकर हिन्दी साहित्य की एक पुस्तक लाए व मुझे दो दिन तक उस पुस्तक से पढाया। 14 मई को उप निरीक्षक भर्ती की परीक्षा थी, उसमें करीब 60 प्रतिशत प्रश्न उस पुस्तक से आए, उनकी मेहरबानी से पिछले 24 वर्षों से उसी परीक्षा से उत्तीर्ण होकर जीविकोपर्जन कर रहा हूं। 24 या 25 दिसम्बर 1995 से 3-4 जनवरी 1996 तक ख्यालामठ जैसलमेर में ओटीसी शिविर था। माट्साहब उस शिविर में पधारे थे। 31 दिसम्बर 1995 को माट्साहब का रिटायरमेंट था। माट्साहब शिविर के बीच में बाड़मेर पधारे और सेवानिवृति के बाद उनको स्टाफ ने कहा कि माट्साहब हम आपको घर छोड़ते हैं तो उन्होंने घर जाने से मना कर दिया और वहां से सीधे 2.30 बजे की बस पकड़कर देर रात्रि वापस शिविर में पधारे। मेरे बाड़मेर अध्ययन के दौरान मैं उनके निकट सम्पर्क में रहा। उसके बाद नौकरी में दूर रहने की वजह से निकट सम्पर्क तो नहीं रहा। परन्तु ओटीसी लिचाना 1999 में मैंने माट्साहब को कहा कि मैं पुलिस की नौकरी से सन्तुष्ट नहीं हूं, कोई दूसरी नौकरी करूंगा। मुझे माट्साहब ने कोई जवाब नहीं दिया। दूसरे दिन सुबह मुझे अकेले को माननीय संघ प्रमुख साहब के पास बुलाया और मेरी बात साहब को बताकर कहा कि ये साहब कैसे मुर्ख है, साहब ने माट्साहब के सामने देखकर बाद में मुझे कहा कि आप नियमित शिविर नहीं कर सकते पर हमेशा सम्पर्क में बने रहना और अब आप यही नौकरी करो। उस दिन के बाद कभी पुलिस से कोई शिकायत नहीं रही।

– भवानीसिंह मूंगेरिया

मेरे प्रेरक

मानव जीवन में ऐसे कुछ लोगों का साथ मिलता है, जो सदा-सर्वदा के लिए चिरस्मरणीय बन जाता है। 1990 के लगभग जब मैं गांव से शहर पढ़ने के लिए आया तो बाड़मेर में उस समय सरकारी विद्यालय नम्बर-01 स्कूल में पढ़ाने के लिए हर कोई अभिभावक लालयित था जैसे आजकल महंगे निजी स्कूलों के लिए उतावले हो रहे हैं। मुझे भी रा.उ.प्रा.वि. 01 में पढ़ना था। परन्तु उस विद्यालय में समय पर नहीं पहुंचने पर एक धोती-कुर्त्ता पहने वहां के प्रधानाध्यापक ने यह कहकर मना कर दिया कि अब इस कक्षा में जगह नहीं है, अगले वर्ष आना। तब उस समय उस ग्रामीण परिवेश के व्यक्ति पर बहुत क्रोध आया, मन ही मन भला-बुरा भी कहा परन्तु आज उसी मन और जीवन में उस व्यक्ति के पहनावे को व उनके व्यक्तित्व को और उनके स्नेह को दिल की गहनतम गहराईयों से भूला नहीं सकता। आज उनकी कमी व गमी इतनी खल रही है जैसे मैंने मेरे संरक्षक को खो दिया है। समय तो निकल जाता है, परन्तु यादे नहीं जाती। बगीचा तो मुरझा जाता है परन्तु उसकी खुशबू को भुलाया नहीं जा सकता। समय के अन्तराल के बाद संयोग से मेरा सम्पर्क श्री क्षत्रिय युवक संघ की सरदारपुरा शाखा में जाने वाले स्वयंसेवकों से हुआ। सन् 1991 में पहली बार शाखा में गया, वहां एक दिन उस धोती-कुर्त्ता पहने व्यक्ति का आगमन हुआ तो मन में थोड़ा अच्छा नहीं लगा परन्तु वहां परिचय हुआ। शाखा का समय बीतने के बाद वे सज्जन मेरे से मुखातिब होकर, कन्धे पर हाथ रखकर जैसी उनकी स्नेहपूर्ण व्यवहार की आदत थी, बोले- 'अब कौनसी कक्षा में हो, मैंने कहा नवमीं में तो उन्होंने कहा अब तो बड़ी स्कूल में चले गए हो खैर वहां भी हम मिलते रहेंगे। उस समय वे व्याख्याता बनकर हाई स्कूल बाड़मेर में कार्यरत थे और मुझे कहा 'अब संघ की शाखा में आते रहना तो अपन मिलते रहेंगे।' न जाने क्यों जिस व्यक्ति से इतनी नफरत हो रही थी उसी के प्रति उस स्नेहपूर्ण आवाज के बाद आदर व सम्मान जगा कि इतने बड़े पद का व्यक्ति मेरे जैसे साधारण विद्यार्थी के प्रति इतना अपनत्व रखते हैं, कन्धे पर हाथ रखकर अपणायत से बात कर रहे हैं। तो मेरे अन्दर में उनके प्रति स्नेह उमड़ पड़ा, रुका हुआ स्नेह स्त्रोत भी बह पड़ा व हमेशा के लिए उस व्यक्तित्व में मैंने अपने पिता का प्यार, सखा की सलाह और संघ मार्ग का प्रेरक व जीवन के मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार किया और उन्होंने मुझे अपना मानकर इन सभी अधिकारों की कमी नहीं आने दी। आज मैं जो भी हूं वह सब उनकी कृपा के बदौलत हूं। मैं सदा उनके प्रति कृतज्ञ हूं। आज उनके इस संसार से भौतिक रूप से चले जाने के बाद भी ऐसा अनुभव हो रहा है कि उनकी सूक्ष्म उपस्थिति सदा सर्वदा के लिए रहेगी। ऐसे स्नेहशील व्यक्तित्व के धनी मेरे प्रेरक परम आदरणीय स्वर्गीय श्री इन्द्रसिंह जी रानीगांव (माट्साहब) को हृदय की गहराइयों से भावांजलि देते हुए उनके कृतित्व व व्यक्तित्व को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। मेरे इस जीवन में जन्म देने वाले पिता का स्नेह व आशीर्वाद बचपन से नहीं मिला परन्तु श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से आदरणीय माट्साहब ने कमी महसूस नहीं होने दी एवं समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा। मैंने जब संघ का कार्य करना प्रारम्भ किया तो निरन्तर उनसे मिलना-जुलना बना रहा और संघ कार्य के लिए मुझे उन्होंने मण्डल प्रमुख के कार्य का उत्तरदायित्व सौंपते हुए एक पत्र लिखा जो मेरे लिए संघ की और से शायद पहली पाती थी जिसको मैं नादानी वश रक्षित नहीं रख पाया लेकिन उसमें वर्णित शब्द आज भी मेरे हृदय में सुरक्षित हैं कि 'बन्धु तुम जिस कार्य को करने जा रहे हो, यही काम तुम्हारे लिए श्रेष्ठ कार्य है, इससे श्रेष्ठ और कोई काम इस संसार में तुम्हारे लिए करने योग्य नहीं है इसलिए पूरे तन-मन-धन से इस को स्वीकार कर के पूर्ण मनोयोग से जुट जाओ 'देव शीश पर चढ़ने लायक तेरा नूर है।'' यह सहगायन की पंक्ति उन्होंने जो मेरे लिए कही थी वह आज भी मेरे प्रेरणा स्तम्भ के रूप में स्मरण रहती है। आदरणीय माट्साहब सदैव मुझे विद्यार्थी जीवन से ही सच्चे प्रेरक रूप में प्रेरणा देते रहे, कभी भी जीवन में भटकने नहीं दिया सदा संघ को स्मरण रखने की सीख देते रहे। पिछले दो चार वर्षों में उनकी उम्र व अवस्था के फलस्वरूप स्वास्थ्य भी नासाज रहने लगा। बाहर आना-जाना कम ही था, मैं कभी-कभार घर पर मिलने जाता तो स्नेह से सराबोर कर अपनी चारपाई के पास बिठा कर पूरे घर-परिवार, बाल-बच्चों तक के समाचार पूछते। वर्तमान में संघ के लिए क्या गतिविधियां चल रही हैं उसकी जानकारी लेते रहते थे। कमजोर स्वास्थ्य होने पर भी उनके अन्दर एक अद्भुत जीवट व उत्साह था। संघ के प्रति वास्तव में पूर्ण स्वीकारोक्ति कि एक भी दिन इसके बिना नहीं रहे। माट्साहब ने बाड़मेर ही नहीं सिवाना, बालोतरा, पाली, जालोर, सिरोही जैसे संघ के लिए अनछुए क्षेत्र थे, वहां गांव-गांव घूमकर संघ का संदेश पहुंचाया जिसके परिणाम स्वरूप आज इन क्षेत्रों में संघ कार्य फल-फूल रहा है। जैसलमेर जिले के पोकरण क्षेत्र में भी माट्साहब द्वारा किए गए संघ कार्य को आज भी याद करते हैं। अपने भौतिक कर्त्तव्य के प्रति इतने निष्ठावान एक भी दिन देरी से विद्यालय पहुंचना उन्हें मंजूर नहीं था। समय के पाबंद, कक्षा में एक भी विद्यार्थी है तो कक्षा लगेगी, अध्ययन होगा। कर्मचारी हड़ताल हो तो भी पहले कक्षा लेकर फिर हड़ताल में सहयोग। 'मेरे कारण मेरे छात्रों का भविष्य खराब न हो, पूर्ण सजगता।' ऐसे कर्त्तव्य निष्ठ व्यक्ति को कभी मान-सम्मान की चाह नहीं रही। एक बार सरकार द्वारा दिए जाने वाले श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान पुरस्कार के लिए अधिकारी ने माट्साहब से फार्म भरने के लिए कहा तो उनका जवाब था 'पुरस्कार लिए थोड़े ही जाते हैं वो तो दिए जाते हैं।' कभी पुरस्कार की चाह नहीं उनका सच्चा पुरस्कार उनके द्वारा पढाए गए हजारों छात्र व संघ कार्य के लिए प्रेरित सैंकड़ों स्वयंसेवक हैं जिनके दिलों में वे विराजमान है। धन्य हूं मैं जो ऐसे आदर्शों से पूरित व्यक्तित्व परम आदरणीय माट्साहब इन्द्रसिंह जी का सानिध्य पाया। पूज्य माट्साहब सदा के लिए स्मरणीय रहेंगे। परम पिता परमेश्वर ऐसी श्रेष्ठ आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। सादर नमनः शत-शत वंदन।

– महिपाल सिंह चूली

मई 1989 का ओटीसी (उत्तरायण कृषि फार्म माउंट आबू) मेरा पहला शिविर था और उसी शिविर में आदरणीय माट्साब से सम्पर्क हुआ। संघ के तृतीय संघ प्रमुख श्रद्धेय नारायणसिंह जी का वह अंतिम शिविर था। पंछी तो वह शिविर कर संघ को भूल ही गया लेकिन स्व. माट्साब की पैनी नजर से छिप नहीं पाया और वे पंछी को पथिक बनाने खोजते-खोजते काठाड़ी पहुंच गए। गांव में छोटे-छोटे बालक शाखा लगा रहे थे वहां पंछी को भी बुलाया और पूछा कि दो वर्ष से (1989 माउंट आबू से) कहां गायब हो? बातों ही बातों में जालोर का नया पता लिया और थोड़े दिन पश्चात पूछते-पूछते नए पते पर जालोर पहुंच गए। आते ही उलाहना दिया कि तुमको जालोर में कोई जानता नहीं है, बड़ी मुश्किल से 2 घंटे से ढूंढते-ढूंढते तुम तक पहुंचा हूं। रात भर हमारे साथ ही रहे और सुबह पीटीसी करड़ा में लेकर गए। शिविर के बाद माट्साब ने संघ शक्ति में लेख लिखा 'करडो कै कंवलो।' लेख में माट्साब ने शिविर के अनुभव लिखे कि जहां प्रारंभ में गांव के सरदारों ने कोई रुचि नहीं दिखाई वहीं बाद में सभी ने मनुहार पूर्वक व्यवस्था की। लेख को पढ़कर गांव वालों ने शिकायत की कि माट्साब ने हमारे गांव को बदनाम कर दिया। तब माट्साब का जवाब था कि मैंने तो आपके गांव को राजस्थान, गुजरात व अन्य जगह संघशक्ति के पाठकों के बीच प्रसिद्ध कर दिया है। 1991 में ही आपकी प्रेरणा और लगातार सम्पर्क के परिणाम स्वरूप जालोर के चामुण्डा माता मंदिर में श्री क्षत्रिय युवक संघ की (संभवतया जिले की पहली) शाखा प्रारम्भ हुई। पंछी को अपने जैसे पंछी ढूंढने में आनंद आने लगा। 22 दिसम्बर 1991 को जालोर में ध्वज लगाकर विधिवत संघ का स्थापना दिवस मनाया और उसी दिन उसी शाखा के 13 स्वयंसेवकों ने झिंझनियाली आईटीसी (24.12.1991 से) में जाने का निश्चय किया। इस प्रकार जालोर का पहला जत्था जैसलमेर की धरती पर पहुंचा। माट्साब के प्रेरणादायी पत्र जीवन को गति देते रहे और पंछी इसी प्रकार अनजाने से ही संघ पथ का पथिक बन गया। उन दिनों आपके पास पूरे जोधपुर संभाग में संघ कार्य का दायित्व था और इस कारण जालोर, सिरोही व पाली में आपका प्रवास होता रहता है। 1996 में स्वर्ण जयंती हेतु सम्पर्क यात्राओं में पंछी को भी उनके साथ रहने का अवसर मिला। आपकी यादाश्त गजब की थी। एक बार किसी व्यक्ति से मिलते थे तो उसको जीवन भर याद रखते थे। संघ के आभा मंडल में आपको देखकर अनुसरण करने की प्रेरणा स्वतः ही मिलती थी।

– मूलसिंह काठाड़ी

आज से 25 वर्ष पूर्व 1995 में जब मैं पीलूड़ा पाठशाला में प्रधानाचार्य के पद पर सेवारत था तब पहली बार माननीय इन्द्रसिंह सिंह जी राणीगांव से सम्पर्क हुआ। वे पदमसिंह जी रामसर के साथ पीलुड़ा पधारे थे। उस समय उनके सानिध्य में संघ कार्य से अनजान क्षेत्र थराद, वाव, सुईगाम आदि में संघ संदेश को घर-घर पहुंचाने के उनके अभियान को देखने का अवसर मिला। सड़कों के अभाव, पीने के पानी का अभाव, आधी बाल्टी पानी में स्नान संध्या आदि करने की परिस्थिति में भी पैदल एक गांव से दूसरे गांव तक की उत्साह पूर्वक उनकी यात्रा ने मुझे पहली बार उनमें संघ को निकट से जानने का अवसर दिया। उनकी बातों में मुझे पूज्य तनसिंह जी की वेदना के दर्शन हुए। वाणी की सरलता एवं अपनापन और उसी का परिणाम है कि मैं आज संघ कार्य में संलग्न रहने का सौभाग्य अर्जित कर पा रहा हूं।

– अजीतसिंह कुणघेर

1997 में भंडारिया ओटीसी में मेरे पांव में फेक्चर हो गया था। 1998 में उसका ऑपरेशन हुआ लेकिन पूर्णतः ठीक नहीं हुआ। 1999 में नारोली ओटीसी में इसी कारण मुझे बुजुर्गों के घट में रखा गया। मेरे अलावा घट के सभी सदस्य 60 वर्ष से अधिक थे। शिविर एक विद्यालय में था इसलिए हमारे घट के लिए आवंटित कमरे में एक श्यामपट्ट था। श्यामपट्ट पर मैंने एक श्लोक लिखा जिसमें 'सुवर्णमयेन पात्रेण' शब्द था। पूज्य माट्साब ने श्लोक को पढ़कर मेरी तारीफ की और बताया कि 'सुवर्णमयेन' की जगह 'हिरण्यमयेन' आएगा। मैंने जिद की और कहने लगा कि मैंने ऐसा ही पढ़ा है। माट्साब शत प्रतिशत सही थे लेकिन मेरी बात को नकारने की अपेक्षा प्रोत्साहित किया कि हो सकता है, एक बार पुनः पढ़ लेना लेकिन आपका प्रयास अच्छा है। बाद में पढ़ा तब पाया कि मैं गलत था लेकिन माट्साब के प्रति नतमस्तक हो गया। हिन्दी साहित्य के शिक्षक एवं संस्कृत के ज्ञाता होने पर भी उन्होंने मेरे प्रतिवाद को महत्व देने की अपेक्षा मुझे प्रोत्साहित करने का प्रयास किया। मुझे यह घटना बार-बार याद आती है और अनेक बार शाखा में इसे दोहरा चुका हूं। आज माट्साब भौतिक रूप से हमें छोड़ चुके है, मैं उन महात्मा को शत-शत नमन करता हूं।

– धर्मेन्द्र सिंह आंबली

1992-93 में जब मैं सिवाना में अध्ययनरत था उस समय श्री क्षत्रिय युवक संघ से नजदीकी परिचय नहीं था। उस वर्ष भीमगोड़ा में एक शिविर लगा तो छात्रावास सहपाठियों के आग्रह पर दर्शक के रूप में उस शिविर के दर्शन का सौभाग्य मिला। स्मृति अनुसार उसी शिविर में प्रथम बार मुझे संघ प्रमुख श्री, माट्साब, अमरसिंह जी अकली सहित वरिष्ठ लोगों व संघ दर्शन का सानिध्य मिला। समय भोजन का था- मेरे पास न थाली, न ही गणवेश और न कोई मंत्र की जानकारी। पंक्ति में बैठा तो पास ही बैठे माट्साब (मैं पूर्ण अपरिचित था) ने मुझे अपने साथ बिठा दिया। भोजन परोसा गया, मंत्र हुआ और भोजन प्रारम्भ। परोसने वाले स्वयंसेवक ने थाली में रोटी रखी उसमें से एक जली रोटी का कोर मैं अलग कर रहा था तथा माट्साब ने उसे ग्रहण कर लिया। मैं अवाक रह गया, भोजन समाप्ति पर मुझे जबरदस्ती हाथ धुलाए और माट्साब ने थाली भी साफ कर दी। घटना के लंबे अंतराल बाद संघ का सानिध्य मिला तो जब-जब माट्साब के दर्शन हुए अनायास वह घटना याद आ जाती और नजरें लज्जा से झुक जाती। अंतिम बार माट्साब के दर्शन बाड़मेर आलोक आश्रम में हुए तो उन्होंने भीमगोड़ा के बारे में भी पूछा कि वो शिविर तुम्हें याद है। जीवन पर्यन्त माट्साब का व्यक्तित्व अनुकरणीय रहेगा। पुण्य आत्मा को श्रद्धांजलि एवं शत-शत नमन्।

गणपतसिंह भंवरानी

(शेष पृष्ठ 7 पर)

आदर्श शिक्षक के रूप में

रा.उ.प्रा.वि. रानीगांव में कार्यरत रहते आस पड़ोस के गांव के विद्यार्थियों हेतु कच्ची झोपड़ियां बनवाई, छात्रावास के रूप में उन्हें पढ़ने के अवसर प्रदान करते साथ ही अपना भोजन का टिफिन उनके साथ खाते, उनके बनी बाजरी की रूखी रोटी व लाल मिर्ची पानी में भीगी हुई खाते। प्रत्येक छात्र के साथ एक-एक कवा लेते, कहते कि मेरा भोजन हो गया। टिफिन का भोजन उन्हें खिलाते थे। रा.उ.मा.वि रानीगांव जब रा.मा.वि. में क्रमोन्नत हुआ तो दो वर्ष तक प्रधानाध्यापक का दायित्व आपने ही संभाला, उस समय परीक्षा परिणाम 25 प्रतिशत से कम रहा करते थे। उस समय भी शत-प्रतिशत परिणाम देकर विद्यालय पूरे राज्य में प्रथम स्थान पर रहा तथा कक्षा 10 के सभी विद्यार्थियों को राज्य सरकार द्वारा निःशुल्क भारत भ्रमण करवाया गया। 1977 में सरकार परिवर्तन हो गई। जुलाई 1978 में जनता सरकार द्वारा राजनीतिक स्थानान्तरण किए जाने से पूर्व रा.मा.वि. रानीगांव में जन सहयोग से चार कक्षा कक्ष व चारदीवारी बनवाई। रानीगांव के पड़ोसी बलाऊ व पनोणियो का तला में भी एक-एक कक्षा कक्ष जनसहयोग से बनवाया।

1978 में रा.उ.प्रा.वि. भेडाना में महज एक झौपड़ी थी, वहां के किसान परिवारों को इकट्ठा कर जनसहयोग हेतु प्रेरित कर भवन निर्माण करवाया। राजनीतिक विद्वेष रखने वालो को नहीं सुहाया और माट्साब का स्थानान्तरण भेडाना से रा.उ.प्रा.वि. सिणधरी कर दिया। जुलाई 1979 में आई जबरदस्त बाढ से सिणधरी विद्यालय बाढग्रस्त हो गया। बाढ का असर समाप्त होने पर सिणधरी के सेठों, जागीरदार व किसान वर्ग से सलाह कर जनसहयोग से भवन निर्माण हेतु चंदा प्रारम्भ कर भवन हेतु नई जगह जमीन आवंटन पत्रावली जिला कलक्टर कार्यालय तक पहुंचाई। तब तक 1980 में राज्य सरकार सत्ता परिवर्तन हो गया। तत्कालीन विधायक बिरधीचन्द जैन ने उन्हें पुनः रानीगांव लगाने को कही तो यह कहकर नहीं गए कि मेरे गांव के ही लोगों ने हटाया। मुझ में जरूर कोई कमी है मुझे कहीं लगवा दो परन्तु पुनः रानीगांव नहीं। फिर राउमावि गांधी चौक में बतौर व.अ. (हिन्दी) कार्य ग्रहण किया। यहां शिक्षक रहते प्रतिदिन मल्लीनाथ छात्रावास जाना, माट्साब कमलसिंह जी का सहयोग करना, हिन्दी विषय शिक्षण भी छात्रावास में नियमित रूप से करते थे। उसी दौरान शहर स्थित रा.उ.प्रा.वि. नं.1 बाड़मेर की स्थिति बिगड़ गई और शहरवासी तत्कालीन प्र.अ. को हटाने की मांग पर अड़ गए तो आपको यहां लगाया गया। अपने परिश्रम से विद्यालय को जिले का नं. 1 विद्यालय बना दिया। विद्यालय में विद्यार्थियों के बैठने की जगह कम पड़ने लगी तो तत्कालीन जिला शिक्षा अधिकारी व शहर के एक प्रधानाध्यापक विद्यालय में बने स्टॉफ क्वाटर्स में रहते थे, उनसे विद्यार्थी हित में क्वार्टर खाली करने का निवेदन किया। प्र.अ. तो मान गए मगर जिला शिक्षा अधिकारी जी ने उल्टा आपको अपने काम से काम रखने की नसीहद दे डाली। अगले दिन सुबह 10 बजे विद्यालय की चाबियां जिला शिक्षा अधिकारी की मेज पर रखकर अपना अवकाश का प्रार्थना पत्र दे आए। शाम होते-होते जिला शिक्षा अधिकारी जी को क्वार्टर भी खाली करना पड़ा और माफी भी मांगनी पड़ी। इस विद्यालय में भामाशाहों के सहयोग से कम से कम 8-10 कक्षा कक्षों का निर्माण करवाया तथा उस समय सभी सरकारी अधिकारियों व सेठों के बच्चें नं. 1 में पढ़ते थे और नं. 01 में प्रवेश पाना गौरव समझा जाता था। संघ प्रमुख जी का आदेश था प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करना, दाढ़ी बनाना, अधोवस्त्र व तौलिया धोना, स्वाध्याय, ध्यान करना। जीवन पर्यन्त जब तक हाथों ने काम किया स्वयं के कपड़े धोए। किसी को धोने नहीं दिए। हाथ चले जब तक डायरी लिखी। दाढ़ी प्रतिदिन बनाई। संघ साहित्य के साथ-साथ रामायण, रामचरित मानस, गीता आदि का नियमित अध्ययन किया। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

शाखामृत

कोरोना संकट के कारण उत्पन्न परिस्थिति के कारण वर्चुअल शाखा का प्रारंभ 13 मई को किया गया जो निरंतर जारी है। वर्तमान में इसमें श्रद्धेय आयुवानसिंह की पुस्तक 'मेरी साधना' पर संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास का मार्गदर्शन मिल रहा है। गत अंक से आगे का मार्गदर्शन।

वर्चुअल शाखा की अगली कड़ियों में श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' के अगले अवतरणों पर चर्चा करते हुए संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास ने बताया कि जब साधक अपने समाज की जर्जर स्थिति को देखता है तो वह पीड़ा से तिलमिला उठता है। व्यथित होकर जब वह समाज की इस दुर्दशा का कारण ढूंढने का प्रयत्न करता है तो उसे समझ में आता है कि उसके समाज ने अपनी उपयोगिता खो दी है, यही उसकी दुर्दशा का कारण है। उपयोगिता अर्थात ईश्वरीय विधान में सहायक होने वाला गुण। यही स्वधर्म का भी अर्थ है। स्वधर्म पालन के बिना समाज जीवित नहीं रह सकता, इसका साधक को अनुभव हो जाता है। साथ ही वह यह भी अनुभव करता है कि भौतिक पतन और मानसिक पराजय के कारण समाज में जो दुर्बलता आई है उसका विपरीत प्रभाव उसकी साधना पर भी पड़ रहा है। अपनी साधना की सफलता के लिए उसे समाज की इस स्थिति को बदलना होगा क्योंकि उसकी साधना परिस्थिति निरपेक्ष होते हुए भी समाज सापेक्ष रहेगी ही। ऐसा अनुभव होने पर साधक के मन में नए समाज के निर्माण का संकल्प जन्म लेता है तथा वह स्वधर्म पालन के मार्ग पर बढ़ने लगता है। किंतु तब उसे अपनी निर्बलता का आभास होता है। आत्म-परीक्षण करने पर वह समझ जाता है कि माँ शक्ति के सक्रिय सहयोग के बिना वह इस मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकता। तब साधक माँ शक्ति की शरण में जाकर उनकी कृपा और सहयोग के लिए प्रार्थना करता है। शक्ति का उपासक बनकर साधक अपने भीतरी सत्व को प्रबल बनाकर दैवीय शक्ति का आह्वान करता है। सत्वोन्मुखी शक्ति ही क्षात्रशक्ति का वास्तविक रूप है। साधक शक्ति की उपासना केवल शब्दों से, स्तुतिगान से ही नहीं करता बल्कि वह तो अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व से- मन, वचन व कर्म से उसकी आराधना करता है। इस मार्ग पर आगे बढ़ने पर साधक को यह भी अनुभव होता है कि केवल उसके शक्ति सम्पन्न बनने मात्र से उसका लक्ष्य पूर्ण नहीं होगा, उसके लिए समाज के प्रत्येक घटक को शक्तिशाली बना कर सांघिक शक्ति का निर्माण करना होगा। ऐसे महान उद्देश्य के लिए साधक को एक जीवनव्यापी और जीवनपर्यंत साधना की आवश्यकता होती है। किंतु इस साधना के व्यावहारिक पथ पर साधक को मूर्त और अमूर्त की समस्या का सामना करना पड़ता है। नया साधक अमूर्त और अगोचर तत्व में सीधे श्रद्धा नहीं कर सकता अतः उसे अपनी साधना के लिए किसी मूर्तिमान स्वरूप की आवश्यकता अनुभव होती है। साधक की यह खोज पूज्य केशरिया ध्वज को पाकर समाप्त होती है क्योंकि उसमें क्षात्र परम्परा का गौरवशाली इतिहास प्रतिष्ठापित है। हमारे पूर्वजों के बलिदान और त्याग का यह ध्वज युगों से साक्षी रहा है इसलिए हमारी साधना का भी साक्षी इसे ही होना चाहिए। केशरिया ध्वज में पूज्य भाव को स्थापित करते ही साधना का पथ सुगम हो जाता है, साथ ही सभी का सहयोग भी साधक को प्राप्त होने लगता है। शक्ति और सहयोग की प्राप्ति के साथ ही अब साधक के सामने कई अन्य आदर्श ध्येय बनकर उपस्थित होने लगते हैं। ऐसे समय में साधक ध्येयनिष्ठा और अनन्यता का मार्ग अपनाता है। इस मार्ग पर जब वह अपने साथ चलने वाले शत्रु व मित्रों की पहचान करने का प्रयत्न करता है तो सर्वप्रथम उसे मित्र-रूप में उसका अहं मिलता है जो उसके साथ ही रहने का आग्रह करता है। किंतु अहं के रहते हुए समर्पण भावना नहीं आ सकती, इस सत्य को समझकर साधक अहं का विसर्जन करने का निश्चय कर लेता है। तब अहं स्वाभिमान का कपट वेश पहनकर आता है किंतु जागृत साधक उसे पहचान जाता है और उसकी ताड़ना द्वारा उससे छुटकारा पाने में लग जाता है। अहं के साथ ही साधक को एक और विकट शत्रु का सामना करना पड़ता है और वह है उसका स्वार्थ। स्वार्थ किसी भी साधक के अंतर्जगत की क्षुद्र वृत्तियों को उत्तेजित कर के उसे उसके महान उद्देश्यों से च्युत कर देता है, इस संभावना को समझकर साधक अपने स्वार्थ को सामाजिक स्वार्थ में निमज्जित करने का मार्ग अपनाता है। इस प्रकार अपनी साधना में आगे बढ़ते हुए साधक वीरता और उदारता के गुणों को अपने में व समाज में उतारने का प्रयत्न करता है तब उसे अनुभव होता है कि इन गुणों का आधार त्याग है। त्याग की पवित्रता के लिए विकार शून्य मन का होना आवश्यक है। साथ ही उत्साह भी साधना को गतिमान रखने के लिए परम आवश्यक है। अहं और स्वार्थ की संतान फूट है जो साधक की शत्रु है और अभ्यास साधक का परम मित्र है। अभ्यास से ही साधक अपने शरीर, मन और आत्मा को संस्कारों के साँचे में ढालता है। इस प्रकार साधक अपनी साधना के शत्रु मित्रों की पहचान करके साधना के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है और एक वैज्ञानिक, परीक्षित और सांस्कारिक प्रक्रिया का पालन प्रारम्भ करता है। अनुकूल वातावरण के निर्माण के पश्चात भी साधक को अपनी इन्द्रियों और उनके विषयों के प्रति प्रलोभन की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस समस्या के समाधान के लिए साधक प्राकृतिक रूप से इन्द्रियों के शमन व दमन का मार्ग अपनाता है। इस दौरान साधक को अपने मन की चंचलता का अनुभव होता है। मन को नियंत्रित करने के लिए साधक अनेक प्रकार के प्रयत्न करता है परंतु सफल नहीं हो पाता। फिर भी साधक निराश होकर ध्येयभ्रष्ट नहीं होता और संकल्प पूर्वक अभ्यास में लगा रहता है। अपने इसी दृढ़ संकल्प और ध्येय के प्रति अनन्यता के बल पर साधक अपने मार्ग में आने वाली बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ता रहता है। आगे बढ़ते हुए साधक को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन रोकने का प्रयास करते हैं। विश्राम की चाह, धन की लालसा, भोगों की आसक्ति आदि उसे विचलित करने का प्रयत्न करते हैं परंतु ध्येयनिष्ठ साधक एक अंधे व्यक्ति की भांति इनकी ओर न देखकर अपने लक्ष्य की ओर ही बढ़ता रहता है।

भावनगर (गुजरात) की भक्तिनगर शाखा का दृश्य जिसमें छोटे बच्चों को साफा बांधना व तलवारबाजी तथा बालिकाओं को घूमर सिखाई जाती है।

प्रतिभाएं

मोती सिंह पुत्र किशन सिंह निवासी तामलोर (बाड़मेर) ने आरबीएसई से कक्षा 10वीं में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

विक्रम सिंह पुत्र भभूत सिंह निवासी बंधड़ा (बाड़मेर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं(विज्ञान वर्ग) में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

स्वरूप सिंह पुत्र किशन सिंह निवासी तामलोर (बाड़मेर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं(कला वर्ग) में 82 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

मालम सिंह पुत्र दीप सिंह निवासी बरियाड़ा (बाड़मेर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं(कला वर्ग) में 80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सोहन सिंह पुत्र नींब सिंह निवासी बरियाड़ा (बाड़मेर) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं(कला वर्ग) में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

खुशी कंवर पुत्री शंकर सिंह निवासी जाखली (नागौर) ने सीबीएसई से कक्षा 12वीं(कला वर्ग) में 88 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

सुहासनी चौहान पुत्री बलवंत सिंह निवासी उच्छारा (राजसमन्द) ने आरबीएसई से कक्षा 12वीं(विज्ञान वर्ग) में 92 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

दुष्यंत सिंह पुत्र आनन्द सिंह निवासी धमोरा (झुंझुनूं) ने सीबीएसई से कक्षा 12वीं में 95.20 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं।

(पृष्ठ चार-पांच का शेष)

आदर्श शिक्षक...

आपने स्वयं के बच्चों के बजाय संघ से जुड़े लोगों व अपने विद्यार्थियों को अधिक स्नेह दिया। घर के लिए कभी सब्जी तक नहीं खरीदी तो विद्यार्थियों के लिए विद्यालय भवन तक बनवा डाले। नाम व पुरस्कार की कभी चाह नहीं रही। एक बार उमाशंकर जी व्यास जिला शिक्षा अधिकारी बाड़मेर थे। आपके कार्य से प्रभावित होकर आपसे कहा कि माट्साब आपके द्वारा किए गए कार्यों की एक फाईल बनाकर प्रस्तुत करो, आपको राज्य सरकार से सम्मानित करवाता हूं। आपका सीधा प्रत्युत्तर था मैंने मेरे कर्त्तव्य का पालन किया है, किसी पर अहसान नहीं। यदि विभाग को लगता है कि श्रेष्ठ कार्य किया है तो पुरस्कार दे चाहे प्रताड़ित करे। मैं दोनों स्थिति में वैसा ही व्यवहार करूंगा। मांग कर भीख ली जाती है पुरस्कार नहीं। जिला शिक्षा अधिकारी जी ने स्वयं के स्तर पर सम्पूर्ण सामग्री इकट्ठी कर फाईल बनाई फिर भी आपने उस पर हस्ताक्षर नहीं किए। यद्यपि जिला प्रशासन ने अपने स्तर पर उन्हें कई बार सम्मानित कर चुका था। परन्तु पुरस्कार प्राप्ति उनकी चाह कभी नहीं रही।

- रा.उ.प्रा.वि. रानीगांव में प्रधानाध्यापक रहते तारातरा का एक जाट विद्यार्थी कक्षा 8 में अनुतीर्ण हो गया तो उसके पिताजी माट्साब के पास आए और बोले कि आठवीं में फेल-पास तो आपके हाथ में है। मैं आपसे गुजारिश करता हूं उसे पास कर दो। आगे से मैं ध्यान रखूंगा। माट्साब ने कहा कि मेरा खुद का बड़ा बेटा 8वीं में ही पढ़ता था और फेल हो गया, यह सुन वे निरुतर हो चले गए।
- आप कर्मचारी संगठनों व शिक्षक संघों में भी पदाधिकारी रहे और जब कभी हड़ताल होती आप विद्यार्थी हित में कक्षा शिक्षण कराते पर अपनी उपस्थिति रजिस्टर में अंकित न कर हड़तालियों का साथ भी देते।
- अपने जीवन काल में अवकाश का उपयोग सिर्फ सामाजिक सारोकार से जुड़े कार्यों या सिर्फ श्री क्षत्रिय युवक संघ कार्य/शिविर के लिए किया यहां तक कि अपने पुत्रों की शादी में भी अवकाश नहीं लिया।
- मितव्यवता व सादा जीवन की तो पराकाष्ठा थे। पूरा जीवन दो कमीज, दो धोती, एक जोड़ी जूती, एक तौलिया ही आवश्यकता रही। दाढ़ी बनाने के लिए एक ही रेजर (पीतल) वाला काम लिया। उस पर अगुलियां के निशान साफ दिखने लगे थे। शिविरों में कभी रेजर भूल जाते तो प्रतिदिन ब्लेड से सीधे दाढ़ी करते थे।
- रा.उ.प्रा.वि. सिणधरी में कार्यरत रहते दो प्रतिभाएं आठवीं में अध्ययनरत थी। जुलाई 1979 में बाढ के कारण सारे रास्ते अवरुद्ध हो गए। आप माह सितम्बर में सिणधरी गए तब पता चला कि दोनों आगे नहीं पढ़ पा रहे हैं। दोनों को बाड़मेर लाए, पहले अपने साथ रखा, फिर एक झौपड़ा बनाकर दिया। दोनों वहां रहे, पढ़े, उनमें से एक आज ए.ई.एन. व दूसरे मेल नर्स ग्रेड प्रथम है।
- रा.उ.प्रा.वि. रानीगांव के दो बहुत ही प्रतिभावान विद्यार्थी थे प्रेमाराम भादू गोलियार व हमीराराम बीरड़ा तारातरा आपके मार्गदर्शन में दोनों में अध्ययन किया। प्रेमाराम ने दो बार आई.ए.एस. साक्षात्कार तक दिया, फिर पता नहीं क्या हुआ। कई दिन पत्र व्यवहार नहीं। तभी दिल्ली के मानसिक रोग निवारण केन्द्र से पत्र आया कि प्रेमाराम यहां है। हमीराराम जी को भेजकर प्रेमाराम को लाए परन्तु दुर्भाग्यवश वो बच नहीं पाए। वहीं हमीराराम ने आठवीं टॉप किया तो सभी ने उन्हें विज्ञान वर्ग लेने हेतु कहा परन्तु माट्साब ने उन्हें कला वर्ग हेतु प्रेरित किया। कला वर्ग से स्नातक कर प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होकर कस्टम कमीशनर अहमदाबाद से सेवानिवृत हुए हैं। वे बताते हैं कि यदि मैं साइंस लेता तो मेरे पास इतना खर्चा नहीं था कि आगे पढ़ पाता और बीच में ही अध्ययन अवरूद्ध हो जाता। गुरुजी के कारण ही मैं आज इस स्थिति में पहुंच पाया हूं।

मेरे प्रेरक...

मेरी नौकरी फरवरी 1997 में सिरोही में अध्यापक के रूप में लगी। तब पता चला कि आदरणीय माट्साब के पास इस क्षेत्र में संघ का दायित्व है और वे मार्च 1997 में रेवदर पधार रहे हैं। मैं रेवदर पहुंचा और पूछता-पूछता ईश्वरसिंह जी रामसर के कृषि फार्म पर पहुंचा जहां आदरणीय माट्साब से पहली भेंट हुई। 1997 में बना वह सम्पर्क अंत तक जीवंत रहा और मैं उनके प्रेम का भागीदार बनता रहा। 1997 में दो प्रा.प्र.शि. सिरोही जिले में लगे, दोनों में आपका सानिध्य मिला और उसके बाद शृंखला में कड़ियां जुड़ती गई। जब भी मिलते सबके समाचार पूछते। किनसरिया ओटीसी में मैं देरी से गया था, दोपहर विश्राम के समय ज्यों ही माट्साब को समय मिला घट में बैठकर सभी के समाचार पूछे। विश्राम के समय बात करने की शिकायत भी कार्यालय में पहुंची। 1998 में ही पाली जिले के एक सज्जन माट्साब के साथ किसी सम्पर्क यात्रा में जाने वाले थे। लेकिन उन सज्जन का समाचार आया कि वे उस यात्रा में नहीं चल सकते क्योंकि उनका पुत्र घर आ रहा है, तब माट्साब का जवाब प्रेरणादायी था। उन्होंने कहा कि यह तो और भी सरल होना चाहिए। पुत्र यदि घर आ रहा है तो उसे घर सौंपो और आ जाओ। वे सज्जन तो ऐसा नहीं कर पाए लेकिन माट्साब तो इस सोच के प्रतीक थे। 1991 की एक घटना जो प्रायः सुनने में आती है, वह इस सोच का प्रमाण है। 1991 में गुजरात के पीरमबेट में संघ का शिविर था। माट्साब शिविर में थे और पीछे उनके छोटे पुत्र कृष्णसिंह (वर्तमान संभाग प्रमुख बाड़मेर) का विवाह था। माट्साब को माननीय संघ प्रमुख श्री ने पूछा कि आप शिविर में हो और घर में पुत्र का विवाह है। माट्साब ने कहा कि विवाह में मेरी कहां जरूरत है। जिसका विवाह है, वह बारात लेकर चला जाएगा। लेकिन संघप्रमुख श्री ने आग्रहपूर्वक उनको एवं कुछ साथियों को रवाना किया और वे सभी विवाह के दिन सीधे ही 18 नवम्बर 1991 को बारात के साथ ओछड़ी (चित्तौड़गढ़) पहुंचे। उनका ऐसा समर्पण ही आज हम सब के लिए प्रेरणादायी है और इसी के बल में हम सबके जेहन में वे स्थाई स्मृति बनकर स्थित हैं।

- रेवंतसिंह पाटोदा

(पृष्ठ दो का शेष)

भारत की... इस ऐतिहासिक अभियान की व्यूह रचना और उसको सफलता पूर्वक अमलीजामा पहनाने का श्रेय भी कर्नल जामवाल को ही दिया गया है। बतौर कुशल पर्वतरोही उन्होंने अपने अनुभवों और क्षमताओं का प्रयोग किया और सैनिकों का नेतृत्व कर उन्हें बताया कि कैसे स्पानग्गुर गैप के शिखरों पर विजय पताका फहरानी है। यह रण क्षेत्र राजपूत योद्धाओं का विशेष सम्मान करता आया है। 1962 में मेजर शैतानसिंह ने रेजांगला जो जोरेकिन ला के समीप है वहां और मेजर धनसिंह ने पैगोंगत्सो पर अपना पराक्रम प्रदर्शित कर परमवीर चक्र पाया था।

(पृष्ठ तीन का शेष)

पस्त प्रतिपक्ष...

ऐसा नहीं है कि ऐसा अब ही हो रहा है बल्कि दशकों से ऐसा चल रहा है और देखते-देखते जनता उकता चुकी है। ऐसी उकताई हुई जनता कि प्रतिक्रिया ही 2014 में प्रकट हुई। ऐसी उकताई हुई जनता ने नोटबंदी की लंबी लाईनों के दंश को झेलकर भी उसके तुरन्त बाद हुए उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा को पूर्ण बहुमत दे दिया। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि भाजपा इन सब दोषों से मुक्त है। सत्ता के साथ में सब बुराइयां उसमें भी आ रही हैं लेकिन फिर भी जनता उससे उकता नहीं रही क्योंकि उसे लगता है कि ये लोग भारत के स्वाभिमान की बात करते हैं। सदियों से दमित रही भारतीयता को सम्मान देने की बात करते हैं। उस भारतीयता के सम्मान में आम नागरिक अपना स्वयं का सम्मान देखता है। एक स्वाभिमानी व्यक्ति भूखा रहकर भी, कष्ट सहकर भी स्वाभिमान को तरजीह देता है और उसी का परिणाम है कि चाहे बातें ही हो, धरातल पर उन बातों का क्रियान्वयन अतिन्यून हो, फिर भी वह मानता है कि कम से कम भारतीयता की बातें तो होने लगी। भारतीयता भारत की राजनीति की केन्द्र बिन्दु तो बनी और यह भारतीयता के प्रति उसका अपनापन ही उन लोगों के प्रति उसे गंभीर होने से रोकता है जो अभी भी दरबारी संस्कृति में विश्वास करते हैं। यह दरबारी संस्कृति का ही प्रभाव है कि जनता स्वीकार करे या नहीं लेकिन फिर भी पार्टी उनको ही परोस रही है, जिनको जनता नकार रही हैं। लेकिन दरबारी है जो यह सिद्ध कर रहे हैं कि हमारे दरबार की यह कृपा ही है कि वह जनता की बात करते हैं, जनता से जुड़े मुद्दे उठाते हैं और फिर भी जनता उनकी बात नहीं सुनती है तो जनता भोगेगी। कोरोना काल में यह बात बड़ी फैली कि हमारे नेतृत्व ने तो जनवरी में ही कह दिया था कि ऐसा होगा लेकिन जनता हमारी बात मानती नहीं इसीलिए भोग रही है। ऐसे दंभ को साथ लेकर अर्थात जनता के बाप बनकर जो जनता का समर्थन चाहते हैं, उनकी बात का यही हश्र होता है, उनकी पार्टी का भी यही हश्र होता है लेकिन भारत का यह दुर्भाग्य है कि जिस लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष जनता की आवाज होता है, वह व्यवस्था से गायब होता जा रहा है और देश अधिनायकवाद की अधोगति की ओर अग्रसर है। ऐसे में यदि विपक्ष के समझदार लोग इस राष्ट्र के हितों को अपने दरबार में नंबर बढ़ाने के प्रयासों पर प्राथमिकता नहीं देंगे तो इतिहास इन्हें माफ नहीं करेगा।

(पृष्ठ एक का शेष)

सक्रिय रहे...

इन बैठकों में स्वयंसेवकों एवं संघ कार्य में सहयोगी समाज बंधुओं से निरन्तर सम्पर्क के कार्यक्रम की समीक्षा की गई एवं प्रांत प्रमुखों को इसमें आ रही समस्याओं पर भी बात की गई।

वर्तमान परिस्थिति में प्रांत प्रमुख अपना दायित्व किस प्रकार निभा सकते है इस पर भी चर्चा की गई। बताया गया कि हर प्रांत प्रमुख के पास उसके प्रांत के स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों की अद्यतन जानकारी रहनी चाहिए। प्रांत के उभरते स्वयंसेवकों की सूची होनी चाहिए एवं प्रांत के अन्य सहयोगी स्वयंसेवकों के सहयोग से उनसे निरन्तर सम्पर्क भी रखना चाहिए। वर्तमान परिस्थितियों में क्यों कि शिविर आदि भौतिक कार्यक्रम संभव नहीं हैं इसलिए हमारा यह सम्पर्क ही हमारे भविष्य के संघ कार्य का आधार बना रहेगा। जहां मैदानी शाखाएं लग सकती हैं, वहां प्रारम्भ हो और प्रांत प्रमुख उन शाखाओं के शिक्षण प्रमुखों के सम्पर्क में रहे। संघशक्ति, पथप्रेरक के ग्राहक सदस्यों की सूची भी प्रांत प्रमुख के पास होनी चाहिए ताकि समय पर नवीनीकरण करवाया जा सके। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि हमारी सक्रियता ही प्रत्येक स्वयंसेवक को सक्रिय करती है। प्रांत प्रमुख का दायित्व एक स्वयंसेवक से कहीं अधिक होता है। उसे संघ से जुड़े रहने एवं तद्नुसार आचरण करने के साथ-साथ अन्यों को ऐसा करने के लिए प्रेरित भी करना होता है। इस प्रकार उसे प्रबंधकीय कार्य भी करना पड़ता है। इसलिए सक्रिय रहे भी और सक्रिय दिखाई भी देवें।

ईश्वरसिंह भाटा को पितृशोक

संघ के स्वयंसेवक ईश्वरसिंह भाटा (जालोर) के पिता **शंभुसिंह भाटा** का 28 अगस्त को 75 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। परमेश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें एवं शोकाकुल परिवार को सांत्वना प्रदान करें।

शंभुसिंह भाटा

वर्चुअल कार्यशालाएं एवं बैठकें जारी

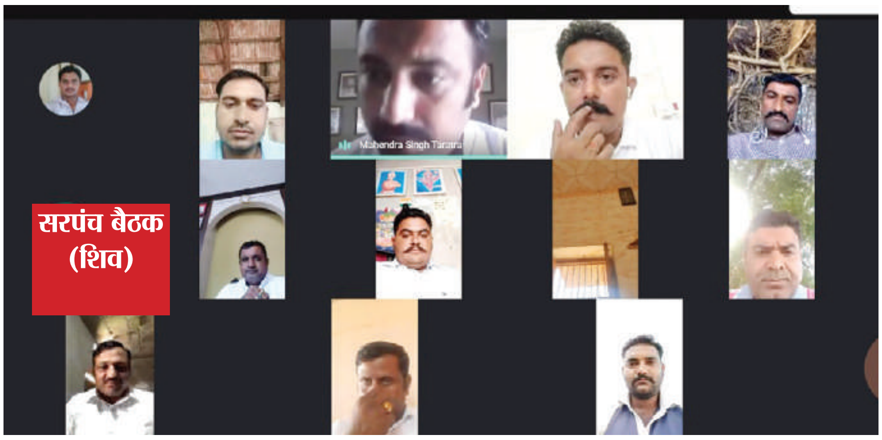

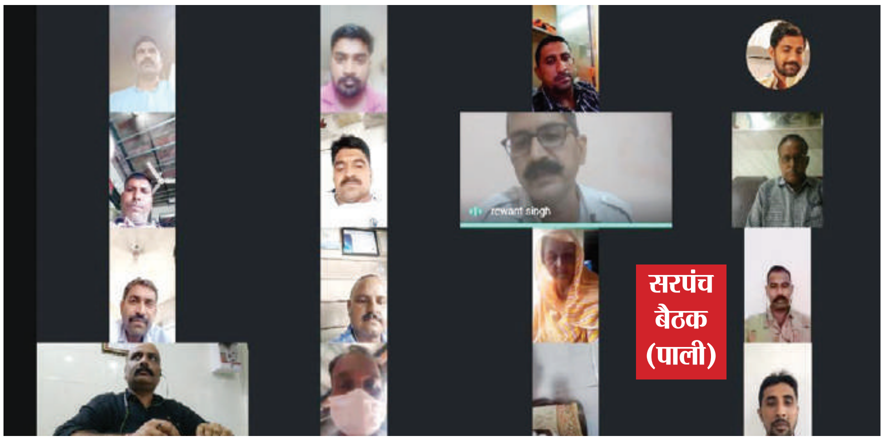

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन के तत्वावधान में विभिन्न विषयों पर वर्चुअल कार्यशालाएं एवं समाज के विभिन्न वर्गों के साथ संवाद कायम करने हेतु बैठकें इस पखवाड़े में भी जारी रहीं। 30 अगस्त को नागौर के राजपूत पत्रकारों की दूसरी बैठक की गई। इससे पूर्व एक बैठक हो चुकी है जिसमें आपसी परिचय के बाद पत्रकारों एवं स्थानीय सहयोगियों के बीच संवाद एवं सहयोग बना है। इसी को आगे बढ़ाने के लिए यह बैठक की गई। 30 अगस्त को ही नागौर जिले की डेगाना तहसील के सहयोगियों की बैठक की गई जिसमें उस क्षेत्र में सकारात्मक लोगों को ढूंढ कर फाउंडेशन से जोड़ने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई।

इससे पहले 29 अगस्त को सूचना तकनीक क्षेत्र की विधाओं की जानकारी देने के लिए आयोजित की जा रही ऑनलाईन कार्यशालाओं की श्रृंखला में नरेन्द्रसिंह छापरी ने सॉफ्टवेयर टेस्टिंग की जानकारी दी। इसके लिए आवश्यक अहर्ताओं एवं योग्यताओं की जानकारी दी गई तथा उनके लिए उपलब्ध प्रशिक्षण मोड्यूल की की चर्चा की गई। इस क्षेत्र में रोजगार के अवसरों एवं मिलने वाले वेतन की भी जानकारी दी गई।

4 सितम्बर को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर राजपूतों के नाम से बने विभिन्न समूहों एवं पृष्ठों के संचालकों की एक ऑनलाईन बैठक रखी गई। इस बैठक में राजस्थान के साथ दूसरे राज्यों से भी इस फील्ड में कार्यरत युवा जुड़े। सभी को श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन का परिचय देते हुए कहा गया कि सोशल मीडिया आज के जमाने में अपनी बात रखने का प्रभावी प्लेटफॉर्म है लेकिन इसका दुरुपयोग भी बहुत होता है। हमें हमारे समाज की उज्वल छवि को ध्यान में रखते हुए इस प्लेटफॉर्म का उपयोग करना चाहिए एवं नकारात्मक बातों का प्रसार करने से बचना चाहिए।

5 सितम्बर को भवन एवं अन्य निर्माण कर्मकार मंडल द्वारा श्रमिकों के लिए चलाई जाने वाली योजनाओं की जानकारी देने के लिए वेबिनार आयोजित की गई। बांसवाड़ा में कार्यरत श्रम निरीक्षक अधिकारी कुलदीपसिंह ने श्रमिक पंजीयन कर श्रमिक कार्ड बनवाने की प्रक्रिया एवं इसमें सामान्यतया की जाने वाली गलतियों के बारे में जानकारी दी। पंजीयन के लिए आवश्यक 90 दिन के कार्य प्रमाण-पत्र में की जाने वाली गलतियों के बारे में बताते हुए उनसे बचने का आग्रह किया। साथ ही इस मंडल द्वारा श्रमिकों के लिए चलाई जाने वाली प्रसूति सहायता योजना, छात्रवृत्ति योजना, शुभ शक्ति योजना (लड़कियों के विवाह में मिलने वाली सहायता), ओजार टूल किट सहायता योजना आदि की जानकारी दी। घायल होने पर मिलने वाली सहायता एवं मृत्यु होने पर मिलने वाली सहायता के बारे में जानकारी दी। साथ ही उन्होंने बताया कि मंडल की सभी योजनाएं स्ववित्त पोषित हैं। निर्माण कार्यों पर लगने वाले श्रमिक कर से प्राप्त राशि द्वारा ही इन योजनाओं का संचालन होता है। ऐसे में प्रायः बजट की समस्या होने पर योजनाओं के तहत सहायता राशि की स्वीकृति में देरी हो जाती है। लेकिन स्वीकृति होती अवश्य है। इसीलिए सभी वास्तविक श्रमिकों को पंजीयन करवा कर श्रमिक कार्ड बनवा लेने चाहिए। 6 सितम्बर रविवार को शिव विधानसभा के हाल ही में निर्वाचित सरपंचों के साथ वर्चुअल माध्यम से बैठक रखी गई। बैठक में उन्हें श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की जानकारी देने के साथ-साथ इस बैठक का उद्देश्य बताते हुए कहा गया कि सरपंच पंचायती राज व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी होती है। आप सब हजारों लोगों के प्रतिनिधि हैं ऐसे में आपका सामूहिक प्रयास समाज के लिए आपके अधिकतम उपयोग हेतु हो इसीलिए फाउंडेशन ने यह प्रयास किया है। फाउंडेशन चाहता है कि आपके आपसी संवाद एवं समन्वय के लिए नियमित इस प्रकार की बैठकें आपके स्तर पर आयोजित की जाएं। बैठक में समुंदरसिंह, श्यामसिंह, हिन्दूसिंह, नरपतसिंह, गोवर्धन सिंह, मोहनसिंह, पृथ्वीराजसिंह, कमलसिंह आदि ने अपनी बात कही एवं फाउंडेशन के सहयोग से इस विषय में नियमित कार्य करने का आश्वासन दिया। 6 सितम्बर को ही नागौर जिले के राजपूत ई मित्र संचालकों की एक बैठक रखी गई। बैठक में बताया गया कि सरकार की सभी योजनाएं ई मित्र के माध्यम से आम नागरिकों तक पहुंचती है। सभी प्रकार के आवेदन ई मित्र के माध्यम से किए जाते हैं इसीलिए ई मित्र संचालक की वर्तमान में महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तिगत लाभ की समस्त सरकारी योजनाओं का लाभ एक ई मित्र संचालक अधिकतम लोगों को दिलवा सकता है। इसके लिए आप सभी का आपसी संवाद बने। आप लोग अन्य लोगों को भी ई मित्र संचालक बनने के लिए प्रेरित करें ताकि हमारे समाज के युवाओं को रोजगार मिल सके साथ ही वे समाज के लोगों को लाभ भी दिलवा सकें। आप सब अपने स्तर पर प्रतिमाह एक बार इस प्रकार संवाद कायम करें, इसका भी प्रयास करें।

इसी दिन जालोर जिले के छात्र नेताओं की भी बैठक रखी गई। उनसे भी आपसी संवाद द्वारा अधिकतम उपयोगी बनाने का आग्रह किया गया। 6 सितम्बर को ही द्वि साप्ताहिक समीक्षा बैठक रखी गई जिसमें फाउंडेशन के सभी सहयोगी जुड़े। बैठक में विगत दो सप्ताह में किए गए कार्यों की समीक्षा की गई। जिलावार लिए गए लक्ष्यों की प्रगति बताई गई। साथ ही आगामी दो सप्ताह के लक्ष्य लिए गए। केन्द्रीय स्तर पर होने वाली वेबिनार के विषय तय किए गए। सभी से स्थानीय लोगों के विभिन्न समूहों से ऑनलाईन संवाद के कार्यक्रम रखने का आग्रह किया गया। 12 सितंबर को पाली जिले के सरपंचों की एक वर्चुअल बैठक रखी गई जिसमें 20 से अधिक सरपंचों से संवाद हुआ। इनसे भी शिव की तरह ही नियमित संवाद बनाये रखने का आग्रह किया गया ताकि वे एक दूसरे के सहयु बन सकें एवं साथ ही मिलकर समाज के लिए अधिकतम उपयोगी बन सकें।

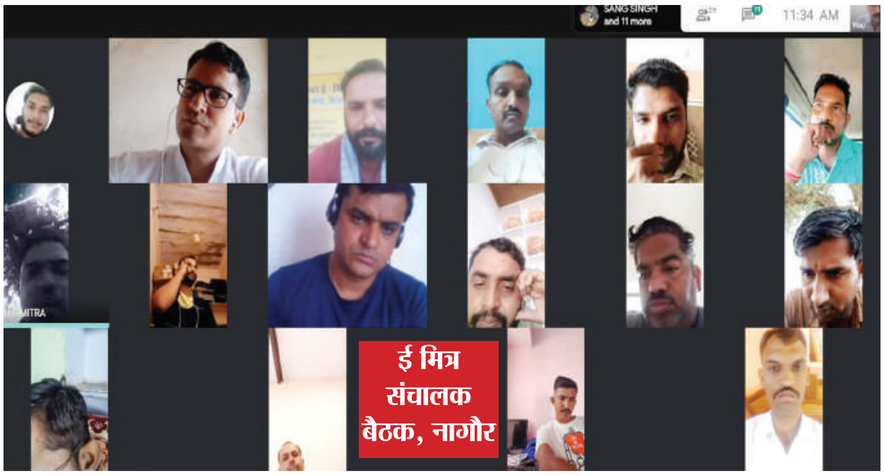

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org